International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 4; Issue 6; June 2017; Page No. 99-101

नेपाल में जनमत

Rashmi Meena
Department Of Political Science, University Of Rajasthan, Jaipur, Rajasthan, India

प्रस्तावना

जनमत

जनमत का अर्थ : सामान्य बोलचाल की भाषा में जनता के मत से है।

सिद्धांत : जनमत सारी जनता का मत होता है। परंतु ऐसा शायद ही कभी होता है कि किसी प्रश्न पर सारी जनता का मत एक सा हो। किसी भी विषय पर सभी व्यक्तियों का मत एक समय में एक जैसा नहीं हो सकता है। अतः ऐसी स्थिति में कहा जाता है कि बहुमत ही जनमत का स्थान ले लेता है। परंतु ऐसा भी नहीं होता है कि जनता में अधिकांश व्यक्तियों का कोई मत नहीं होता, क्योंकि अधिकांश जनता विचारशील नहीं होती तथा बहुसंख्यक जनता महत्वपूर्ण प्रश्नों के विषय में सोचती भी नहीं है। इसके अतिरिक्त ऐसा सोचना भी ठीक नहीं है। कि बहुमत सदैव ठीक ही होता है। वस्तुगत दृष्टि से देखा जाये तो जनमत सारी जनता का मत नही होता बल्कि यह सोचने वाले व्यक्तियों का मत होता हे। जनमत की धारणा का प्रयोग केवल किसी प्रश्न के बारे में ही जनता का मत जानने के लिए किया जा सकता है। 'देश में जनमत की क्या स्थिति है।' इस प्रकार के साधारण प्रश्न पर विचार–विमर्श नहीं किया जा सकता है। परंतु करो के बारे में जनमत क्या कहता है। इस प्रकार के प्रश्न पर अर्थपूर्ण तथा परिमाणोत्पादक विचार–विमर्श हो सकता है। सच तो यह है कि जनमत की कसौटी सार्वजनिक हित है। जो मत किसी विशेष वर्ग या सम्प्रदाय के हित की भावना से प्रेरित होता है। उसे जनमत न मानकर वर्ग मत या साम्प्रदायिक मत कहना चाहिए। जनमत ऐसा होना चाहिए जिसमें यदि अल्पमत भाग भी न ले, फिर भी उसे वह भय से नही बस दृढ़ विश्वास के कारण स्वीकार करे।

संक्षेप में जिस मत का जितने अधिक व्यक्तियों द्वारा समर्थन किया जाये तथा जिसका लक्ष्य जितना अधिक जनहित करना हो वह मत उतना ही सच्चे जनमत के निकट होगा जनमत को हमें संख्यावाचक रूप में प्रयुक्त नहीं करना चाहिए इसे उन लोगों का मत समझना चाहिए जो कि जनता के यथार्थ हितों का ध्यान रखते है। इनकी संख्या चाहे कम हो या अधिक यह महत्वहीन है। अतः जनमत को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है। यह समाज में बहुसंख्यकों का मत है। जिसको अल्पसंख्यक भी अपने हितों के विरूद्ध नहीं समझते हो।

प्रत्येक समाज में समाज के हित संबंधी विषयों पर लोगों के कुछ न कुछ विचार अवश्य होते है। प्रारम्भ में वे असंगठित और अस्पष्ट रहते है। विषय का भली–भांति ज्ञान न होने के कारण जनता के विचारों में अस्थिरता भी रहती है। जैसे –जैसे विषय पर अधिक प्रकाश पड़ता है। विचारों में परिवर्तन होने लगता है। कुछ काल के पश्चात् कुछ समस्यायें सबको आकृष्ट कर लेती है। उनके संबंध में पूर्वकालीन अस्थिर तथा अस्पष्ट विचार आगे चलकर स्पष्ट रूप धारण कर लेते है। जनता के विचारों के इस निश्चित रूप को बहुमत द्वारा निर्धारित कर लिये जाने पर उसे लोकमत कहा जाता है।

नेपाल में जनमत

नेपाल एक अत्यल्प अविकसित तथा पिछड़ा हुआ राज्य है। जिसके जनमत का ठीक–ठीक ज्ञान प्राप्त करना अथवा पाश्चात्य अधुनातन अध्ययन विधि द्वारा विश्लेषित करना अत्यंत कठिन है। सच तो यह है कि नेपाली राजनीति में जनमत का महत्व एक से अधिक बार प्रमाणित हो चुका है।

ऐतिहासिक दृष्टिकोण से नेपाल में जनमत का महत्व अभी तक तीन बार स्पष्ट एवं युगांतकारी रूप में प्रकट हो चुका है। सर्वप्रथम वर्ष 1950–51 की जनक्रांति के पीछे जनमत का दबाव था, जिसके चलते देश में 104 वर्षों से चला आ रहा राणा शासन समाप्त हुआ प्रथा प्रजातंत्र की स्थापना हो सकी। दूसरी बार वर्ष 1979 में राजा वीरेन्द्र ने जनमत के दबाव के चलते राजनीतिक प्रणाली में परिवर्तन के लिए जनमत संग्रह की ऐतिहासिक घोषणा की थी। इसके उपरांत एक दशक पूर्व वर्ष 1990 में जनमत में परिवर्तन तथा इसके दवाब के चलते राष्ट्रव्यापी प्रजातंत्रीय आंदोलन सफल हो सका तथा तीस वर्षों से चली आ रही पंचायत प्रणाली समाप्त हो गई। इन महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं के अतिरिक्त अनेक सार्वजनिक महत्व के विषयों के लिए जनमत ने अपना महत्व सिद्ध किया है।

लेकिन इतना होने के बावजूद नेपाली जनमत का पर्यवेक्षण निर्भर रहने योग्य नहीं बन पाया है। इसका कारण यह है कि नेपाली समाज आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को आत्मसात् करने में पूरी तरह सफल नहीं हो सका है। इतना ही नही, नेपाली जनता अनेक स्तरों पर अनेक दिशाओं में विभिन्न जातीय एवं क्षेत्रीय समूहों में बंटी हुई है। जिसके कारण वे अनेक विषयों में स्पष्ट एवं निश्चित मत नहीं रखती। ऐसे विषयों के बारे में जिनका संबंध प्रतिदिन के जीवन से नहीं होता, जनता के जो मत होते है। वे साधारण तौर पर बुद्धिजीवियों के छोटे–छोटे समूहों के मत होते है। इस प्रकार पाश्चात्य विकसित राष्ट्रों में समाचार पत्र के सम्पादकीय लेखों, रेडियों एवं टेलीविजन टिप्पणीकारों, ट्रेड यूनियनों, ऐच्छिक संघो और पत्र लिखने वाली जनता जैसी कोई भी चीज शायद ही नेपाल के संदर्भ में उपलब्ध है। इन सबका कारण लम्बे समय लगभग 30 वर्षों तक नेपाल में निर्दलीय पंचायती व्यवस्था का अस्तित्व में होना रहा है। सूचना साधनों पर राज्य के एकाधिकार तथा ऐच्छिक समुदायों के निर्माण की स्वतंत्रता ने होने के कारण स्वस्थ जनमत के साधनों का विकास नहीं हो सका है। नेपाल में जनमत की स्थिति के संदर्भ में यह भी तथ्य ध्यान देने योग्य है कि नेपाली जनता का एक बहुत बड़ा भाग आज भी अशिक्षा के अंधकार में आंकठ डूबा हुआ है। इस व्यापक निरक्षरता के फलस्वरूप नेपाली जनता अपने ही संसार में सिमटी हुई है। जन साधारण जनता का राज्य के उस विशिष्ट अभिजन वर्ग पर बहुत कम प्रभाव पड़ता है। जो राजनीतिक निर्णय लेने तथा उन निर्णयों को लागू करने का कार्य करते है। लेकिन पिछले एक दशक के दौरान नेपाली राजनीति को प्रजातांत्रिक रूप देने की जो नई प्रवृत्ति उभरकर सामने आयी उसमें नेपाल की जनता धीमी किन्तु सतत् गति से अग्रसित होती गई।

राजनीतिक क्षितिज के अत्यंत संकुचित होने तथा उसमें परम्परागत अभिवृत्तियों के प्रभावी होने के बावजूद आधुनिकता की ओर उन्मुख तथा बढ़ता कुलीन तंत्र तथा मध्यम शिक्षित वर्ग के प्रभाव के कारण नेपाल में जनमत को एक निश्चित आधार मिल पाया है। सन् 1990 में बहुदलीय प्रजातांत्रिक आन्दोलन की सफलता के पश्चात् नेपाल की स्थिति में तीव्र बदलाव परिलक्षित हो रहा है।

देश में स्वैच्छिक संघ या समुदाय बनाने तथा राजनीतिक पार्टी गठित करने की आजादी दिये जाने के परिणामस्वरूप जनमत निर्माण की उपयुक्त दशा प्राप्त हुई है। अतएव अब नेपाल में जनमत प्रभावशाली होता जा रहा है। अब उसकी समय–समय पर जनता द्वारा समर्थित मांगों में स्पष्ट अभिव्यक्ति होने लगी है।

नेपाल में जनमत निर्माण तथा अभिव्यक्ति के साधन

किसी भी समुदाय का अधिकांश भाग किसी भी सार्वजनिक प्रश्न के विषय में कोई स्पष्ट विचार अथवा निश्चित मत नहीं रखता, किन्तु कुछ व्यक्ति ऐसे होते है। जिनमें आलोचनात्मक शक्ति होती है, जिनकी तीक्ष्ण आँखे सामाजिक दोषों को देखती है तथा जो उसको दूर करने के लिए उत्तम सुझाव दे सकते है। वास्तव में जनमत का निर्माण इनके द्वारा ही किया जाता है। शेष जनता तो इनके विचारों का अनुसरण करती है। जनमत के निर्माण में अनेक बातें, विभिन्न संस्थायें तथा अभिकरण सहायक होते है। जो जनमत के निर्माण तथा उसकी अभिव्यक्ति में सहायता करते है। नेपाल के विशेष संदर्भ में जनमत निर्माण के साधनों के रूप में निम्नलिखित साधनों का संक्षिप्त विवेचन यहाँ देना उपयुक्त होगा।

1. **चर्चा एवं अफवाहः–** नेपाल जैसे पिछड़े अविकसित राज्य में जहाँ शिक्षा की पर्याप्त कमी तथा अज्ञान के अंधकार का विशाल साम्राज्य है। सार्वजनिक महत्व के सामाजिक विषयों पर अधिकांश व्यक्ति जो विचार रखते है। उनका आधार प्रायः चर्चा एवं गप्प होते है। जब कभी सनसनीपूर्ण अफवाहें फैलती है। तथा अधिकांश व्यक्ति उन्हें सच मान लेते है। तथा समाचारों की सत्यता के विषय में छानबीन का कोई प्रयत्न नहीं करते। इस प्रकार के निष्कर्ष अति दोषपूर्ण एवं हानिकारक होते है।
2. **सार्वजनिक सभायें एवं रैलिया :–** जनमत को प्रभावित करने का सबसे प्राचीन एवं प्रचलित साधन सार्वजनिक सभाओं तथा रैलियों का जनमत निर्माण के साधन के रूप में महत्व बढ़ता जा रहा है। ये सभायें विभिन्न राजनीतिक दलों तथा समुदायों द्वारा आयोजित की जाती है। इन सार्वजनिक सभाओं में सार्वजनिक लाभ के विषयों पर खुलकर वाद–विवाद किया जाता है। जो जनता की रूचि को जागृत करते है। सभाओं द्वारा दलों के राजनेता अपने दल की नीति कार्यक्रम एवं उनके आधारभूत सिद्धांतो को आसानी से समझाा पाने में सफल होते है।
3. **समाचार पत्रः–** सार्वजनिक सभा तथा भाषणों से भी अधिक प्रभावशाली साधन आज के युग में समाचार पत्र है। प्रजातंत्रीय सरकार की पुर्नस्थापना होने के पश्चात् नेपाल में समाचार पत्रों को अधिक स्वतंत्रता प्राप्त हुई जिसका कारण यह है कि नेपाल के 1990 के संविधान द्वारा नागरिकों को सूचना अधिकार प्रदान किया गया है। साथ ही विचार, भाषण तथा लेखन की भी स्वतंत्रता प्रदान की गई है। नेपाली सरकार प्रेस की स्वतंत्रता के प्रति पूरी तरह प्रतिबद्ध है। नेपाल में प्रेस सार्वजनिक नीति के बारे में सूचना देने का प्रमुख माध्यम है। जिसके परिणामस्वरूप नेपाल के प्रेस की जनमत निर्माण में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका हो गई है।
4. **शिक्षण संस्थाएँः–** किसी भी देश में स्वस्थ जनमत के लिए शिक्षणालयों का होना अति आवश्यक है। क्योंकि शिक्षणालयों में बच्चों एवं युवकों के मस्तिष्कों को ढाला जाता है। तथा ये ही देश के भावी नागरिक होते है। नेपाल के आधुनिक राजनीतिक विकास में यहाँ की शिक्षण संस्थाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। वास्तव में स्कूल कॉलेजों तथा विश्वविद्यालयों में पढ़ाये जाने वाले विषयों इतिहास, भूगोल, कानून, राजनीतिशास्त्र अर्थशास्त्र, दर्शन तथा नीतिशास्त्र आदि से जनमत निर्माण में अत्यधिक सहायता मिलती है। ये शिक्षण संस्थायें लम्बे समय के लिए जनमत निर्माण का कार्य करती है। इस संदर्भ में काठमाण्डु स्थित शिक्षण संस्थाओं का श्रेय अत्यधिक है।
5. **रेडियों एवं टेलीविजनः–** जनमत निर्माण के आधुनिक साधनों के रूप में रेडियो तथा टेलीविजन भी उपयोगी सिद्ध हुए है। नेपाल में रेडियों तथा टेलीविजन पर यद्यपि सरकार का पूर्ण नियंत्रण है। फिर भी इन साधनों के माध्यम से समाचार तथा राजनीतिक नेताओं के विचार तथा मत नेपाली जनता तक पहुँचाये जाते है। वैसे स्वस्थ जनमत के निर्माण के लिए यह आवश्यक है कि इन साधनों–रेडियो तथा टेलीविजन पर न तो कुछ व्यक्तियों का नियंत्रण हो एवं नहीं सरकार का एकाधिकार हो।
6. **राजनैतिक दल तथा स्वैच्छिक संघः–** वर्तमान नेपाल में जनमत निर्माण तथा अभिव्यक्ति में राजनैतिक दल तथा विभिन्न संघो एवं संगठनों का काफी योगदान है। इस समय नेपाल में 44 राजनैतिक दल है, तथा अनेकों गैर राजनीतिक संघ एवं संगठन कार्यरत् है। इन सबका स्थान जनमत निर्माण तथा अभिव्यक्ति के साधनों में महत्वपूर्ण है। वास्तव में इनका उद्देश्य ही राजनीति के प्रति जनता की रूचि को बढ़ाना है। नेपाली राजनीतिक दल अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए जिन विभिन्न उपायों का प्रयोग करते है। उनमें से ये प्रमुख है। सार्वजनिक सभायें, रैलियाँ, प्रदर्शन, व्यक्तिगत सम्पर्क, प्रचार साहित्य का वितरण, आकर्षक नारों की रचना तथा पोस्टरों का प्रदर्शन, समाचार पत्रों का प्रकाशन करना इत्यादि इन सभी साधनों को अपना कर ये राजनीतिक दल जनमत के निर्माण तथा अभिव्यक्ति में अपनी भूमिका का निर्वाह करते है।
7. **व्यवस्थापिका सभाः–** आधुनिक प्रजातंत्र शासन का आधार जनता द्वारा निर्वाचित व्यवस्थापिका सभायें है। जिनमें शासन की नीति, कार्यक्रम और विभिन्न प्रस्तावों पर वाद–विवाद होता है। नेपाल में प्रतिनिधि सभा तथा राष्ट्रीय सभा दोनों संसद के भाग है। इन सदनों में सरकार की नीति, कार्यक्रम उसके प्रस्तावों आदि पर व्यापक बहस तथा वाद–विवाद होता है। व्यवथापिका के सदस्यों को सभी सार्वजनिक प्रश्नों की जानकारी उपलब्ध करायी जाती है। इस प्रकार नेपाल की व्यवस्थापिका जनमत निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

अंत में नेपाली जनमत के संदर्भ में यह कहना आवश्यक है कि यह अभी उतना अच्छा एवं स्वस्थ नहीं हो पाया है। जितना कि उसे होना चाहिए। वस्तुतः जनमत का अच्छा एवं स्वस्थ होना बहुत सीमा तक राजनीतिक नेताओं की वृद्धि तथा स्वार्थहीनता पर निर्भर करता है। अच्छे स्वस्थ एवं प्रभावशाली जनमत के लिए कई बातों का होना आवश्यक है। जिनमें मुख्य बातें अग्रलिखित है।

1. जनता शिक्षित एवं बुद्धिमान होनी चाहिए।
2. जनता के हितों में साम्य होना चाहिए।
3. राज्य के विभिन्न समूहों में साधारण मतभेदों के पीछे शासन के रूप में तथा राष्ट्रीय उद्देश्यों के विषय में आवश्यक रूप से सहमति होनी चाहिए।

4. अल्पसंख्यक समूहों को अपने मत को सभी उचित एवं शांतिपूर्ण ढंगो से व्यक्त करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।
5. अन्त में राजनीतिक दलों के आधार साम्प्रदायिक अथवा वर्गीय हित के नहीं होना चाहिए क्योंकि ऐसे दल जनमत को विकृत बनाते है। अतः उपर्युक्त बातों का ध्यान रखते हुए नेपाल के राष्ट्र निर्माण कर्त्ताओं को स्वस्थ जनमत का निर्माण करना चाहिए।

संदर्भ सूचीः

1- The Government of Nepal, Free english Rendering of government of Nepal Act 2004 (1948 A.D) alongwith his Highness's inavgration speech. (Kathmandv 1948).
2. नेपाल अधिराज्य को संविधान नेपाली, (काठमाण्डु विधि मंत्रालय नेपाल, 1959।
3. कान्स्टीट्यूशन ऑफ द किंगडम ऑफ नेपाल एण्ड इलेक्टोरल लॉज, (काठमाण्डु 1991)।
4. कान्स्टीट्यूशन ऑफ नेपाल इंग्लिश ट्रान्सलेशन, (काठमाण्डु, भ्डळ (नेपाल)।
5. अंतरिम गर्वनमेण्ट ऑफ नेपाल एक्ट (1954), (काठमाण्डु मिनिस्ट्री ऑफ लॉ)।
6. किंग महेन्द्र प्रोक्लेमेशन्स स्पीचेज एण्ड मैसेज वॉल्यूम 1 (जुलाई 1951 – दिसम्बर 1960), (काठमाण्डु डिपार्टमेण्ट ऑफ पब्लिसिटी, नेपाल 1967)।